24 लुई पाश्चर

FETT2D

पुराने जमाने में यदि किसी को पागल कुत्ता काट लेता, तो जानते हो, उसका इलाज कौन करता था? लुहार!

लुहार लोहे की एक सलाख लेता। उसे दहकते हुए अँगारों पर रख देता और जब सलाख बिल्कुल लाल हो जाती तो उससे रोगी के जख्म को जला देता। रोगी यदि सख्त–जान होता तो बच जाता। सामान्य रूप से तो यही होता था कि न रोग रहता था और न रोगी। लुई पाश्चर ने भी कई बार अपने गाँव के लुहार को यह इलाज करते हुए देखा था और हर बार भय से वह काँप उठता था।

अपने दादाजी या बुजुर्गों से पता करो कि पहले पागल कुत्ते के काटने पर व्यक्ति का इलाज इसके अलावा और कैसे होता था? लिखो।

Ykbl dk cpiu

लुई पाश्चर फ्राँस नामक देश का रहने वाला था। उसका जन्म 27 दिसंबर 1822 को हुआ था। लुई ने आरंभिक शिक्षा गाँव के स्कूल में प्राप्त की। फिर पिता ने उसे पेरिस भेज दिया ताकि वह स्कूल मास्टरी की शिक्षा ले। पेरिस में उसका मन बिल्कुल न लगा। उसे अपने घर, गाँव और माता–पिता की याद हर समय सताती रहती।

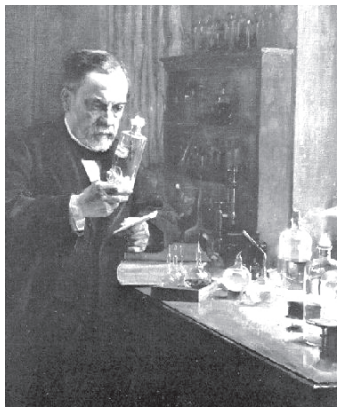

लुई बीमार होकर घर वापस आया। तबीयत अच्छी हुई तो उसको एक अन्य नगर के कॉलेज में भेज दिया गया। वहाँ से उसने विज्ञान में अपनी पढ़ाई की।

पहले लोग यही समझते थे कि कीड़े और कीटाणु गंदी और सड़ी–गली वस्तुओं में अपने आप पैदा होते हैं या यूँ समझो कि सड़ी–गली वस्तुएँ ही कीड़े और कीटाणु बन जाती हैं। लुई पाश्चर ने निरंतर प्रयोगों से सिद्ध किया कि यह विचार बिल्कुल गलत है। सड़ी–गली वस्तुओं में कीड़ों और कीटाणुओं को पैदा करने की शक्ति नहीं है, बल्कि ये कीड़े और कीटाणु माँस, फल, सब्जी और अन्य वस्तुओं में हवा के द्वारा प्रवेश करते हैं, और उन्हें सड़ा देते हैं।

D;k rEgkj ;gk Hkh ,lk ekuk tkrk g fd lMh&xyh phtk l dhM ink gkr g

----

लुई पाश्चर पागल कुत्तों के काटने से इंसानों को होने वाली बीमारी का इलाज खोजना चाहते थे। इसके लिए पाश्चर ने बहुत–से पागल कुत्तों को अपनी प्रयोगशाला में इकट्ठा किया। वे उनके शरीर में उपस्थित कीटाणुओं का गौर से अध्ययन करते और दिन–रात उन पर प्रयोग करते रहते। इन पागल कुत्तों के कारण स्वयं उनका जीवन हर समय संकट में रहता। एक बार तो कुत्तों की विषैली लार, जिसे वह शीशे की नली से मुँह से खींच रहे थे, उनके मुँह में चली गई, परन्तु लुई पाश्चर ने इसकी परवाह नहीं की।

तुम जानते हो कि टीका उस दवा को कहते हैं जो बीमारी होने से पहले ही उससे बचाव के लिए हमें दिया जाता है, जैसे बचपन में दिए गए टिटेनस के टीके या पोलियो की दवा। असल में टीकों के जरिए इन कीटाणुओं की बहुत ही थोड़ी मात्रा हमारे शरीर में डाल दी जाती है। इससे हमारे खून में मौजूद कुछ पदार्थ बीमारी से लड़ने की तैयारी कर

लेते हैं। वे इन बीमारियों के कीटाणुओं से लड़ते हैं। साथ ही हमेशा के लिए इस तरह के कीटाणुओं के प्रति चौकन्ने भी हो जाते हैं। ताकि आगे कभी भी अगर बीमारी के असली कीटाणुओं का हम पर हमला हो तो उससे शरीर और खून के ये लड़ाकू पदार्थ आसानी से निपट सकें।

पाश्चर पागल कुत्तों में मौजूद कीटाणु की मात्रा कम–से–कम करके खरगोश जैसे कई जानवरों पर प्रयोग कर रहे थे। फिर इस तरह से बनाई दवा को वे वापस पागल कुत्तों पर आजमाते थे। इस तरह वे लगभग तीन साल तक मेहनत करते रहे। तीन साल बाद उनकी प्रयोगशाला में अलग–अलग नस्लों और अलग–अलग उम्र के 50 कुत्ते मौजूद थे। इनको वे पागल कुत्ते की बीमारी रेबीज या जलांतक से मुक्त कर चुके थे।

लेकिन क्या आदमी को भी यही टीका लगाया जाए और यदि लगाया जाए, तो औषधि की मात्रा कितनी हो? ये प्रश्न पाश्चर को परेशान कर रहे थे। लेकिन इनका उत्तर आदमी पर प्रयोग किए बिना नहीं दिया जा सकता था?

पागल कुत्ता बहुत खतरनाक होता है। वह काट ले, तो दो–चार दिन आदमी को पता नहीं चलता, लेकिन उसका विष अंदर–ही–अंदर अपना काम करता रहता है। फिर तबीयत खराब होने लगती है। सिर में दर्द होता है और रोगी बहुत अधिक बातें करने लगता है। प्यास बढ़ जाती है और बढ़ती ही चली जाती है। वह पानी पीना चाहता है, लेकिन पानी गटक नहीं पाता। गले से शुरू होकर धीरे–धीरे उसका पूरा शरीर अकड़ने लगता है और वह मर जाता है।

tc dÏk u 14 txg dkV fy;k

कुछ लोग एक दिन 8–9 वर्ष के लड़के को लेकर आए। उसको पागल कुत्ते ने 14 जगह काटा था और उसकी हालत बहुत खराब थी।

लुई पाश्चर ने उस बच्चे को दो और डॉक्टरों को दिखाया। सभी को यह लगने लगा कि बगैर इलाज के वह मर ही जाएगा। तब पाश्चर ने अपना नया टीका उस पर आजमाने का तय किया। उन्होंने उसी दिन शाम को उस लड़के को पहला टीका लगाया। फिर अगले 9 दिनों में उन्होंने उसे 12 और टीके लगाए।

इस इलाज के कुछ हफ्तों में ही वह बच्चा ठीक होने लगा। तीन महीने बाद तो वह बिल्कुल अच्छा हो गया। बच्चे के अच्छे होने का समाचार बिजली की तरह सारे संसार में फैल गया। साथ ही लुई पाश्चर भी बहुत प्रसिद्ध हो गए।

dqŸkk dkV ys rks D;k djsa\

यदि किसी को कुत्ता काट ले तो सबसे पहले यह देखना चाहिए कि काटे हुए व्यक्ति के खून का कुत्ते के थूक से संपर्क हुआ कि नहीं। अगर हुआ है तो फिर यह पता करना पड़ता है कि कुत्ता पागल है या नहीं। अगर कुत्ता पालतू न हो, उसे पहले से ही टीके न लगे हों और वह भाग जाए तो काटे हुए व्यक्ति को टीके लगवाने पड़ते हैं। ये टीके तुरंत ही शुरु कर देने चाहिए।

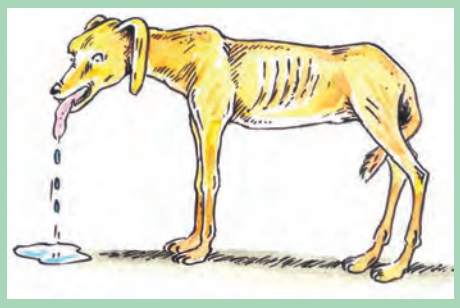

अगर काटने वाला कुत्ता पालतू हो या फिर उसे पकड़ लिया हो तो अगले 10 दिन तक बाँधकर रखना और ध्यान से देखना होता है। उन 10 दिनों में उसमें कोई भी अजीब हरकत दिखाई दे या वह बीमार पड़ने लगे तो मान लेना चाहिए कि वह पागल है। ऐसे में काटे हुए व्यक्ति को टीके लगाना चालू कर देना चाहिए।

अगर 10 दिन तक कुत्ता बिल्कुल ठीक रहे, उसमें किसी तरह की बीमारी के कोई लक्षण दिखाई न दें, तो फिर उसे छोड़ सकते हैं। फिर काटे व्यक्ति को भी कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिए। एक बात और, जहाँ पर कुत्ता काट ले, वहाँ घाव को तुरंत साफ पानी और साबुन से धो लेना चाहिए। फिर उस व्यक्ति को टिटेनस की सुई भी लगवा देनी चाहिए।

तुम्हारे यहाँ पागल कुत्ते के काटने पर क्या करते हैं? पता करो।

पागल कुत्ते के काटने से मरीज में क्या–क्या लक्षण दिखते हैं?

यदि किसी को पागल कुत्ता काट ले तो तुम उसको क्या सलाह दोगे?

---

geu D;k lh[kk \

ekf[kd

1. तुम कैसे जान सकते हो कि कोई कुत्ता पागल है या नहीं?

2. लुई पाश्चर किस देश का रहने वाला था?

fyf[kr

1. प्राचीन काल में पागल कुत्ते के काटने पर व्यक्ति का इलाज किस प्रकार किया जाता था?

2. अखबारों ने लुई पाश्चर को मानव का मुक्तिदाता कहा था। तुम इससे क्या समझते हो? क्या तुम सोचते हो कि लुई पाश्चर के बारे में ठीक ही कहा गया है?

3. टीका क्या होता है? संक्षेप में समझाओ।

[kkt vkl&ikl

1. अपने आस–पास के अस्पताल में जाकर पता करो कि वहाँ पागल कुत्ते के काटने का टीका है अथवा नहीं?

2. पता करो कि पागल कुत्ते के काटने पर अस्पताल में कौन–कौन सी दवाइयाँ दी जाती हैं?

3. यहाँ आपने लुई पाश्चर ने किस तरह रेबीज का टीका बनाया के बारे में पढ़ा। ऐसे ही किसी अन्य वैज्ञानिक के द्वारा किए गए कार्य (खोज) के बारे में पढ़े और एक छोटी–सी रिपोर्ट तैयार करें।